नटराज – तंजावर

- प्रमाणपत्र -

मैं प्रमाणित करता हूँ कि, मेरे निर्देशन में शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल्. (हिन्दी) उपाधि के लिए "मोहन राकेश के नाटकों में अभिनेयता" यह लघु-शोध-प्रबन्ध श्री महेश जयकुमार उपाध्ये ने प्रस्तुत किया है। यह उनकी मौलिक रचना है। जो तथ्य इस प्रबन्ध में प्रस्तुत किये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

प्र. कुलगुरु डॉ. विलासराव घाटे
निर्देशक.

कोल्हापुर।
दिनांक : 29/6/95

...

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६००४

- प्र ख्या प न -

यह लघु प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है जो एम्. फिल् (हिन्दी) के लिए लघु-शोध-प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। मेरी जानकारी के अनुसार यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय में किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गयी है।

(श्री महेश जयकुमार उपाध्ये)
शोधछात्र

कोल्हापुर।
दिनांक : 29/6/95

...

- प्राक्कथन -

प्रसादोत्तर कालीन मोहन राकेश जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व सदा से मुझे आकर्षित करता रहा है। जब आषाढ का एक दिन, आधे-अधूरे जैसे नाटकों का बी॰ए॰ की उपाधि के दौरान अध्ययन किया तब उनके अन्य नाटकों को पढने की रुचि उत्पन्न हुई। राकेश जी के चारों नाटक पढने के बाद इन्हीं चार नाटकों पर लघु-शोध-प्रबन्ध लिखने की इच्छा उत्पन्न हुई। वैसे तो काफी मात्रा में राकेश जी के नाटकों पर शोध प्रबन्ध लिखे हैं। लेकिन अभिनय तत्व को लेकर राकेश जी के नाटकों की चर्चा विस्तृत रूप में नहीं है। नाटक के अन्य तत्वों को लेकर चर्चा होती रहती है पर अभिनय को लेकर संकुचित मात्रा में चर्चा क्यों ?

राकेश जी तो प्रसादोत्तर काल में एक प्रयोगधर्मी कलाकार रहे हैं। उनके नाटक का मूलाधार प्रयोग करना ही रहा है। इसीकारण उनके नाटक में रंगमंच एवं अभिनय तत्व समाविष्ट है। मैंने इस लघु-शोध-प्रबन्ध में राकेश जी के नाटकों को अभिनय तत्व की दृष्टि से देखने का प्रयास किया है। नाट्यशास्त्र डिप्लोमा के अध्ययन के दौरान मुझे जो अभिनय दृष्टि प्राप्त हुई उसी दृष्टि को प्रस्तुत किया है।

यहाँ राकेश जी के केवल चार नाटक - आषाढ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे-अधूरे और पैर तले की जमीन - को लिया है। बाकी उनके ध्वनि नाटक, बीज नाटक, एकांकी को नहीं लिया है। इन चार नाटकों पर अभिनेयत्व की दृष्टि से देखते समय इस लघु-शोध-प्रबन्ध को मुख्यत: चार अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय में राकेश जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षेप में परिचय दिया है।

द्वितीय अध्याय में नाटक में अभिनय के महत्त्व को स्पष्ट किया है।

तृतीय अध्याय में हिन्दी नाटकों की अभिनय परम्परा का जिक्र किया है। वैसे तो यह बृहत विषय है। इस विषय पर अलग-सा शोध-प्रबन्ध हो सकता है। फिर भी इसका परिचय सुचारू है।

चतुर्थ अध्याय में मोहन राकेश के नाटकों में स्थित अभिनेयता को स्पष्ट किया है। कालानुरूप अभिनय के तत्व बदलते रहे हैं। अतः जो तत्व प्रचलित रहे हैं। उन्हीं के अनुसार यहाँ नाटकों की समीक्षा की है। यथाशक्ति मैंने बीच-बीच में तालिका एवं रंगमंच - नमूने (स्टेज डिझाईन) को प्रस्तुत किया है। प्रत्येक की कल्पना - प्रतिभाशक्ति अलग होने से रंगमंच - नमूने में बदल हो सकता है। और होना भी आवश्यक है।

अन्त में उपसंहार में राकेश जी के अभिनय तथ्य को प्रस्तुत किया है।

अतः इस लघु-शोध-प्रबन्ध से आप संतुष्ट रहेंगे यही मेरी कामना है।

...

- ऋ ण नि र्दे श -

सबसे गौरव की बात है कि मुझे प्र - कुलगुरु डॉ• विलासराव घाटे जी के निर्देशन में एम्•फिल्• उपाधि के लिए लघशोध-प्रबन्ध लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके चरणों में सदा नतमस्तक रहूँगा। संकट विमोचक एवं श्रध्देय डॉ• वसंत मोरे जी के ऋण का बोझ उतारे-उतर नहीं सकता। मेरे जीवन में इनकी स्मृति अमिट रहेगी। मेरे आदरणीय गुरुवर्य डॉ• अर्जुन चव्हाण जी का मैं शतशः आभारी हूँ। उन्होंने अपनी निजी समस्याओं को परे रखकर मुझे लघु-शोध-प्रबन्ध लेखन के लिए जो सहयोग दिया है वह अद्वितीय है। इस प्रबन्ध के लिए समय-समय पर प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देने और आवश्यक सामग्री देने का कार्य करनेवाली आदरणीय रंजनी भागवत, सौ• एम•एस• जाधव मॅडम तथा देवचंद कॉलेज के आदरणीय गुरुवर्य श्री प्रकाश शहा सरजी का शुक्र गुजार हूँ।

सागर की गहराई जितना प्यार देनेवाले मेरे आदरणीय पिता श्री जयकुमार उपाध्ये एवं मेरी माता सौ• विजयमाला उपाध्ये का असीम सहयोग प्राप्त हुआ है। घर के भाई - भाभी और मेरे मित्रवर्य श्री जगन्नाथ पाटील, श्री अनिल साळोखे का जो सहयोग प्राप्त हुआ उसके लिए उनका सदा से ऋणी रहूँगा।

लघु-शोध-प्रबन्ध लेखन के दौरान निवास की सुविधा करा देनेवाले आदरणीय गुरु श्री डी•ए• पाटील सर, श्री बबन अदीळकर जी, प्रबुध्द भारत हायस्कुल के अध्यापक गण, श्री धनपाल कटके एवं शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल तथा कर्मचारी आदि का मैं सदा ऋणी रहूँगा।

शीघ्रता से लघु-शोध-प्रबन्ध का टंकलेखन करा देनेवाले श्री सुधाकर भोसले जी का भी शुक्र गुजार हूँ। इस कार्य के लिए जिनका भी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग मिला है उन सबका आभारी हूँ।

श्री महेश जयकुमार उपाध्ये,
शोध-छात्र

स्थान : कोल्हापुर।
दिनांक : २९/६/९५

...